संपादकीय

प्रिय पाठको! यह अंक हमारे महापुरुषों के योगदान एवं उनकी मानवता के लिए शिक्षा को समर्पित है। क्योंकि इस माह में हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री एवं लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाते हैं। इस वर्ष हमने राष्ट्रपिता की जयंती को 'स्वच्छ भारत दिवस' तथा लौह पुरुष की जयंती को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया। इन महापुरुषों के द्वारा राष्ट्र को समृद्ध एवं कल्याणकारी बनाने के लिए दिए गए मानवता के संदेश, जैसे— शांति, सत्य, अहिंसा, एकता एवं अखंडता आदि हमारी शिक्षा प्रणाली के मूल मंत्र हैं, ताकि हम सब लोग साथ मिलकर रहें एवं विकास कर सकें। इसके लिए हमें सार्थक शिक्षा की नितांत आवश्यकता है।

सभी को प्रारंभिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के उचित अवसर प्राप्त होने चाहिए। लेकिन जब विद्यालयों में विद्यार्थियों का नामांकन स्तर गिरने लगेगा तो वे अपना पूर्ण विकास नहीं कर पाएँगे। अतः नामांकन स्तर पर आधारित लेख 'बिहार के माध्यमिक विद्यालयों में नामांकन दर का विश्लेषणात्मक अध्ययन' में इस चुनौती से निपटने के लिए स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों का उल्लेख किया गया है।

शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य तभी पूरा होगा जब समावेशी शिक्षा की बात की जाएगी। समावेशी शिक्षा पर आधारित लेख 'भारतीय समाज में तृतीय जेंडर एवं समावेशी शिक्षा' उन समस्याओं पर प्रकाश डालता है, जो भारतीय समाज में तृतीय जेंडर की शिक्षा में समावेशीकरण के दौरान दिखाई देती हैं और साथ ही इस लेख में उन समस्याओं के उचित समाधान भी दिए गए हैं। वर्तमान युग डिजिटल प्रौद्योगिकी का युग है और अब शिक्षा में भी प्रौद्योगिकी का प्रयोग होने लगा है। शिक्षा को नई दिशा देने में प्रौद्योगिकी एक विशिष्ट माध्यम है। इस पर आधारित लेख 'शिक्षा एवं डिजिटल प्रौद्योगिकी' में, शिक्षा में प्रौद्योगिकी का क्या योगदान है और अधिगमकर्ताओं को इससे कितनी सुविधा मिलती है, पर प्रकाश डाला गया है।

ऐसे विद्यार्थी जो शारीरिक तथा मानसिक रूप से सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न हैं, उनके लिए शिक्षा हेतु विशेष सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए। इन्हीं प्रयासों पर आधारित शोध पत्र 'विज्ञान कक्षाओं में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाइयाँ' दिया गया है, क्योंकि विज्ञान सीखने में प्रयोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसके लिए दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में अनुकूल उपकरण मिलने चाहिए। वर्तमान समय में शिक्षा का प्रारूप भी बदला है। इंटरनेट और तकनीकी उन्नति ने शिक्षा के प्रसार का तरीका बदल दिया है। शिक्षा में कला का भी प्रमुख योगदान रहा है। कला एवं तकनीक पर आधारित पठन-पाठन के प्रति समाज का नज़रिया भी बदला है। इसी बदलाव पर आधारित लेख 'शिक्षा के बदलते स्वरूप में कला एवं तकनीकी की भूमिका' में, शिक्षा के निरंतर बदलते प्रारूप और

© NCERT not to be republished

उसमें कला एवं तकनीक की भूमिका का अध्ययन तथा विश्लेषण किया गया है। 'बहुसांस्कृतिक शिक्षण— एक समावेशी दृष्टिकोण' नामक लेख में यह बताया गया है कि बहुसांस्कृतिक विविधता संबंधी मूल्य के अधिकतम संपोषण के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा की अवधारणा का प्रादुर्भाव हुआ है, जिसमें अंतर्निहित दर्शन, बहुसांस्कृतिक शिक्षण का औचित्य, रणनीतियाँ, शिक्षक-विद्यार्थी व्यवहार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

'माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण में सहकारी अधिगम विधि की प्रभावशीलता' नामक शोध पत्र में बताया गया है कि इस विधि में विद्यार्थी स्वेच्छानुसार अधिगम करते हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में सहकारी अधिगम विधि जैसी नवाचारी विधियों का उपयोग न केवल विद्यार्थियों, बल्कि शिक्षकों के लिए भी लाभकारी है। वहीं एक अन्य लेख 'एकीकृत शिक्षा दर्शन पर आधारित भारतीय शिक्षा प्रणाली — एक दृष्टिकोण' में, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु एकीकृत शिक्षा दर्शन पर ज़ोर दिया गया है। इस लेख में स्वतंत्र विचार, रचनात्मकता, मानवतावादी सोच, शिक्षक और विद्यार्थी के बीच परस्परता की बात की गई है। यदि विद्यार्थी सीखने में विफल होते हैं, तो इसके लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों को विद्यार्थियों के अनुकूल लचीला बनाया जाए, इसलिए 'समावेशी शिक्षा में अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प की उपयोगिता' नामक लेख में, इस पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। शिक्षा के संदर्भ में औपचारिक शिक्षा को कुछ लोग उचित नहीं समझते। वे मानते हैं कि जिज्ञासा उत्पन्न करना, खोजी प्रवृत्ति के माध्यम से गणित, भाषा तथा विज्ञान को सीखना ही शिक्षा है। इस पर आधारित लेख 'वैकल्पिक विद्यालय में शिक्षा— एक अनुभव' दिया गया है। इस लेख में, समय का बंधन, पाठ्यपुस्तकें तथा परीक्षा से दबावमुक्त तथा अनौपचारिक रूप से व्यावहारिक अनुभवपरक शिक्षा देने पर ज़ोर दिया गया है।

व्यक्ति में नैतिकता और उत्तम चरित्र के विकास के लिए नैतिक शिक्षा भी दी जानी चाहिए। *श्रीमद्भगवद्गीता* में मानव के नैतिक विकास व कल्याण हेतु शिक्षा दी गई है। इसी पर आधारित लेख 'सार्वकालिक प्रासंगिक— *श्रीमद्भगवद्गीता* का शिक्षा दर्शन' दिया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा द्वारा आध्यात्मिकता एवं राष्ट्र निर्माण पर ज़ोर देना प्रासंगिक लगता है। इसी पर आधारित लेख 'श्रीराम शर्मा आचार्य का शैक्षिक चिंतन एवं उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता' में आचार्य श्रीराम शर्मा के शिक्षा संबंधी विचार, शिक्षकों के लिए संदेश, शिष्य एवं उनका कर्तव्य, व्यक्ति एवं समाज का निर्माण इत्यादि महत्वपूर्ण बिंदुओं पर तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा, साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished